Date- 17/06/2020

Name- Raj Kapoor Verma

college name- Shakuntalam Institute of teachers education At - Krihindi Kumhu station Sasaram

class - B.Ed 1st year

papper - C2 unit-5

DOMS Page No. Date / /

विद्यालयी पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या —

पाठ्यचर्या विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु है। विद्यालय में उपलब्ध सभी संसाधन जैसे - विद्यालय भवन विद्यालय के अन्य उपकरण पुस्तकालय की पुस्तकें, तथा अन्य शिक्षण सामग्री का एक मात्र उद्देश्य पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग देना है। कक्षा की समस्त क्रियाएं, पठ्यसहगामी क्रियाकलाप तथा मूल्यांकन की समस्त प्रक्रिया विद्यालयी पाठ्यचर्या के परिणामस्वरूप ही नियोजित की जाती है।

अर्थ —

पाठ्यचर्या शैक्षिक व्यवस्था का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग है। पाठ्यचर्या की अवधारणा के सन्दर्भ में प्रायः विद्वानों में एकमत राय नहीं है। पाठ्यचर्या को लोग पाठ्यचर्या या विषय-वस्तु जैसे नामों से भी संबोधित करते है।

2 पाठ्य-चर्या शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - पाठ्य एवं चर्या। पाठ्य का अर्थ है - पढ़ने योग्य अथवा पढ़ाने योग्य और चर्या का अर्थ है - नियम पूर्वक अनुसरण। इस प्रकार पाठ्य-चर्या का अर्थ हुआ पढ़ने योग्य (सीखने योग्य) अथवा पढ़ाने योग्य (सिखने योग्य) विषय-वस्तु और क्रियाओं का नियम पूर्वक अनुसरण। पाठ्य-चर्या के लिए अंग्रेजी में curriculum शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द लैटिन भाषा के करेरे (currere) से बना है जिसका अर्थ है - रनवे (Runway) या रेस कोर्स (Race course) अर्थात दौड़ का रास्ता या दौड़ का क्षेत्र अर्थात किसी निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मार्ग पर दौड़ना। या ऐसे भी कह सकते हैं कि इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में पाठ्य-चर्या बच्चों के लिए दौड़ का रास्ता या दौड़ के मैदान के समान है जिस पर चलते हुए बालक अपने वांछित शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करता है।

3

फ्रोबेल के अनुसार — "पाठ्यचर्या को मानवजाति के समस्त ज्ञान और अनुभव का सार समझना चाहिये।"

ब्रुवेकर के अनुसार "पाठ्यचर्या एक ऐसा क्रम है जो किसी व्यक्ति को स्थान पर पहुँचने के लिए तय करना पड़ता है।"

हेनरी के अनुसार — "विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या के अंतर्गत समस्त विद्यालय का वातावरण आता है, जिसमें विद्यालय में प्राप्त सभी प्रकार के संपर्क, पठन, क्रियाएँ एवं विषय सम्मिलित हैं।"

इस प्रकार पाठ्यचर्या का सम्बन्ध सीखने वाले एवं सिखाने वाले से होता है। यह सीखने और सिखाने वाले को जोड़ने वाली अनिवार्य कड़ी है।

5

पाठ्यचर्या की उपयोगिता एवं महत्व :-

पाठ्यचर्या की उपयोगिता एवं महत्व इस प्रकार से है।

- पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षा की प्रक्रिया सुचारु रूप से चलती है।
- शिक्षा के किस स्तर पर इन पाठ्य विषयों को पढ़ाना है किन क्रियाओं को सीखना है और किन अनुभवों को देना है यह सारी बातें पाठ्यचर्या में स्पष्ट रूप से दी जाती है।
- विद्यालयी जीवन के कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा पाठ्यचर्या में मिलती है।
- पाठ्यचर्या के उपलब्ध हो जाने से आवश्यक एवं बोधनीय पाठ्य सामग्री को पुस्तक की रचना के समय ध्यान में रखा जाता है।
- पाठ्यचर्या विद्यार्थी और अध्यापक दोनों को सही दिशा बोध कराती है।

S

- मूल्यांकन पाठ्यचर्या के आधार पर ही किया जाता है।